Episode - 17

एपिसोड शीर्षक :

<u>बबलू का रोबोट</u>

स्क्रिप्ट : DrManasPritam Das

हिंदी अनुवाद : ShriniwasOli

संकल्पना और समन्वय : डॉ। बी.के. त्यागी

पात्र परिचय

बबलू :नवीं का छात्र (उम्र 15 वर्ष)

समर :बबलू के पिताजी, पेशे से शिक्षक

अनामिका (अनु) :बबलू की बेटी। एमएससी की छात्रा

दुर्बा : बबलू की माताजी

टेक फेयर में आया हुआ दर्शक :50 वर्ष

प्रोफेसर दीक्षित :उम्र करीब 50 वर्ष

बबलू नवीं कक्षा में पढ़ता है और अभी अपने रोबोट के साथ खेलने में व्यस्त है। बबलू को उम्मीद है कि अपने इस रोबोट को वो साइंस सिटी में होने वाले अगले टेक फेयर (Tech Fair)में जनता के सामने पेश कर सकेगा। बबलू के पिता समर गणित के अध्यापक हैं और अभी वो अपने दो साल के नाती को चुप कराने की कोशिश में हैं जो लगातार जोर-जोर से रो जा रहा है। यह समर की बेटी अनामिका का बेटा है। अनामिका एमएससी कर रही है और अभी उसकी परीक्षाएं हैं। रोते हुए नाती को साथ में लेकर समर बबलू के कमरे में प्रवेश करते हैं।

(दो साल के बच्चे के रोने की आवाज़)

समर : (**रोते हुए बच्चे को चुप करातेहुए**) अरे... अरे... रोओ नहीं गुड्डू...। मम्मी जल्दी ही आने वाली है...। मेरा प्यारा गुड्डू।

बबलू : (खींजते हुए)पापाजी, आप गुड्डू को यहां क्यों ले आए ? अभी मैं अपना काम कर रहा हूं।

समर :क्या करूं बबलू। गुड्डू तो चुप होने का नाम ही नहीं ले रहा है। लगता है ये अनामिका के वापस आने तक ऐसे ही रोता रहेगा।

बबलू :(झल्लाते हुए स्वर में) इसकी मम्मी कहां चली गई है अभी..। मेरा मतलब.. दीदी कहां है ?

समर :वो तो अपना एडमिट कार्ड लेने गई है। अगले सोमवार से उसके एमएससी के एक्जाम भी शुरू होने वाले हैं।

बबलू :पापाजी, आपसे ये चुप नहीं हो सकेगा। आप गुड्डू को मम्मी के पास ले जाइए। वो ही इसे चुप करा सकती हैं।

समर : लेकिन रसोई में भी तो अभी काफी काम बिखरा है। तब खाना कैसे बनेगा ?

बबलू :हां, ये तो है। मुझे तो लगा था कि आप स्कूल चले गए होंगे। आज तो आपको स्कूल में टीचर्स की एक मीटिंग में भी जाना था ना ?

समर :हां, मीटिंग में जाना तो था...। दरअसल छुट्टियों में हर हफ्ते हम लोग स्कूल के पाठ्यक्रम पर बातचीत करते हैं। लेकिन मैंने सोचा कि गुड्डू की देखभाल के लिए घर पर ही रह लेता हूं।

बबलू :लेकिन पापाजी, ये इसी तरह चिल्ला-चिल्ला कर रोता रहा तो फि अपना काम कैसे कर पाऊंगा।

समर :लेकिन तुम आखिर ऐसा क्या कर रहो जो इतना ज्यादा परेशान हो ?

बबलू :पापाजी, आपको तो मालूम ही है..। मैं अपने रोबोट को फिनिशिंग टच दे रहा हूं। टेक फेयर (Tech Fair) शुरू होने में अब सिर्फ तीन दिन ही बचे हैं।

समर : ओह... मुझे तो लगा कि तुमने सबकुछ कर ही लिया होगा। अब इसमें कुछ और जोड़ रहे हो क्या ?

बबलू :हां, इसमें बाहर की ओर सुरक्षा के लिए एक परत और लगानी है। टेक फेयर में दूसरे रोबोट्स के साथ मुकाबले में तो खूब गिरना -पटकना होता है। मैं इसे एक नर्म पॉलीमर से पूरी कवर कर लूंगा। जिससे को झटकों को सहन कर सके।

समर :(चौंकते हुए) अच्छा ! तो ये टेक फेयर में दूसरे रोबोट्स से मुकाबला भी करेगा। मैं तो सोच रहा था कि ये कहीं पर खड़ा होकर अपनी हरकतों से लोगों को लुभाने की कोशिश करेगा।

बबलू :वहां तो और भी बहुत कुछ मजेदार होने वाला है। वहां रोबोट्स के बीच एक मुकाबला होगा जिसमें वो किसी खास रंग की बॉल को एक छेद में डालने की कोशिश करेंगे।

समर : (रोते हुए बच्चे को चुप कराने की कोशिश)आइडिया ! एक शानदार आइडिया है। ऐसे करो, तुम इस रोबोट का एक डेमो (Demo) दिखा दो।शायद रोबोट को देखकर ही गुड्डू कुछ शांत हो जाए। क्यों ? ठीक रहेगा ना ?मुझे भी रोबोट की हरकत देखने का मौका मिल जाएगा।

बबलू :(उल्लासित स्वर में) आप भी देखना चाहते हैं पिताजी ? तो एक मिनट रुकिए। ... इधर .. ये किसी गाड़ी की तरह दिख रहा है ना आपको ?

समर : हूं..। लेकिन पहले तक तो लोग सोचते थे कि रोबोट भी किसी इंसान की तरह ही दिखता होगा...। चार हाथ-पैरों वाला।

बबलू :हां, बाजार में रोबोट के नाम पर ऐसे कई खिलौने मिल जाते हैं जो इंसानों की तरह ही दिखते हैं। वो खिलौने रोबोट ज्यादा कुछ हरकत तो नहीं करते लेकिन छोटे बच्चों को बहुत पसंद आते हैं।

(बच्चे के रोने की लगातार आवाज़ आ रही है)

समर: मैंने अपने साथ के एक टीचर के घर पर भी एक ऐसा ही रोबोट देखा था जो कुछ सवालों के जवाब भी दे रहा था। लेकिन अभी उनको छोड़ और अपना खेल शुरू करो... देखो जरा.. गुड्डू ने तो रो-रो कर आसमान सिर पर उठा लिया है।

(लकड़ी के बोर्ड पर रोबोट के लोहे के पहियों के चलने की आवाज़ / रोबोट बॉल को एक छेद में डालता है)

बबलू : (छोटे बच्चे को खुश करने के अंदाज में) देखो गुड्डू देखो...। कैसे घूम रहा है ये...। देखो अब ये इस बॉल को उठाएगा..।ये देखो... इस तरह से

समर :बबलू, रिमोट को जरा ढंग से पकड़ो। काफी नाजुक लगा रहा है ये। तुम्हें इसके बटन बहुत सावधानी से दबाने चाहिए।

बबलू :ठीक है पापाजी। लेकिन यहां अब भी एक दिक्कत है। रोबोट सभी ओर आसानी से घूम रहा है लेकिन जब इसे दाईं ओर मोड़ते हैं तो मुश्किल आ रही है।

समर : (हल्की हंसी के साथ) लेकिन इसने हमारी तो एक मुश्किल दूर कर दी। देखो..। गुड्डू ने रोना बंद कर दिया है। लगता है उसे ये रोबोट बहुत पसंद आ रहा है।

बबलू :(हंसते हुए) अच्छा... मेरा रोबोट बस इसी काम का रह गया है क्या ?

समर : अरे नहीं.. नहीं... लेकिन तुम्हें इस दिक्कत को तो दूर करना ही होगा। मुझे लग रहा है कि कहीं रोबोट के सामने वाले ह्वील (Wheel) के डिजाइन में ही कोई गड़बड़ी तो नहीं ?

बबलू : उस पर तो मैं कुछ नहीं कर सकता हूं पिताजी। मुझे तो बाजार में जो कुछ मिल सका वही लगाया है। वैसे तो ऑनलाइन खरीदारी करके विदेश से भी रोबोट के ढांचे को मंगाया जा सकता है लेकिन वो आठ-दस गुना ज्यादा महंगा होगा।

समर :हां.. ये तो कही बात है। लेकिन बबलू, क्या तुम्हें पता है कि इसमें एआई (AI)यानी आर्टिफिशियल इंटलीजेंस काफी मददगार हो सकती है।

बबलू :क्या कहा ? एआई? पापाजी... इस मामूली से रोबोट में आर्टिफिशियल इंटलीजेंस की तो कल्पना भी मुश्किल है। एआई भला इसमें कैसे काम करेगी? वैसे सच कहूं तो मुझे इस बारे में ज्यादा जानकारी भी नहीं है।

समर :बबलू, ये तो तुम्हें मालूम ही है कि तुम्हारी दीदी को भी एआई में काफी दिलचस्पी है। उसका इरादा भी एआई में रिसर्च करने का ही था। मुझे ठीक-ठीक तो याद नहीं लेकिन अनामिका के एक प्रोफेसर ने उसे एक रिसर्च सेंटर को लेकर भरोसा भी दिलाया था।

बबलू :अच्छा? मुझे तो यह बिल्कुल भी मालूम नहीं है। फिर क्या हुआ?

समर : देखो बबलू। हमेशा सब कुछ हमारे हिसाब से तो नहीं होता। रितेश और अनामिका एक दूसरे से प्यार करते थे और उनका इरादा था कि पढ़ाई पूरी करने के बाद ही वो शादी करेंगे। इसी दौरान रीतेश की माताजी बीमार पड़ गईं और डॉक्टर ने कह दिया कि अब वो कुछ ही दिनों की मेहमान हैं।

बबलू :ओह.. ।

समर :दरअसल रीतेश की माताजी की ख्वाहिश थी कि वो अनामिका को अपनी बहू के रूप में देख लें। (रुंधे हुए गले से) ऐसे में हमको भी जल्दी में शादी करनी पड़ी। तब तक अनु एमएससी फर्स्टइयर की पढ़ाई कर चुकी थी।

(बबलू की माताजी का प्रवेश होता है)

समर : क्या जी... । बबलू को ये सब बताने की क्या जरूरत है। आप भी बस... कुछ समझते ही नहीं।

बबलू :(विरोध के स्वर में) अब मैं भी बड़ा हो गया हूं मम्मी। आप लोग मुझे हमेशा छोटा ही समझते रहते हैं। आज तक तो आपने मुझे ये सब नहीं बताया।

दुर्बा : (कोमल स्वर में.. पुचकारते हुए) ओ हो.. जैसा बाप.. वैसा बेटा। देखो.. आप दोनों ने ध्यान ही नहीं दिया। गुड्डू भी सो गया। लाओ.. गुड्डू को मेरी गोद में दो। **(गुड्डू को गोद में लेती है)**

समर : जरा ध्यान से**..**

दुर्बा :हां.. हां..। मुझे मत सिखाओ कि बच्चों को कैसे पकड़ते हैं। इन दोनों बच्चों को मैंने ही पालपोस कर इतना बड़ा किया है।

समर : ठीक है भागवान..। तुम जीतीं और मैं हारा..। अब खुश ?

(सभी हंसते हैं)

समर :बबलू, जब तुम्हारी दीदी लौट आएगी, तब हम आर्टिफिशियल इंटलीजेंस के बारे में बात कर लेंगे।

दुर्बा :और तुम दोनों समय पर नहा भी लेना। गर्मियों की छुट्टियों का मतलब ये नहीं है कि रोज के काम समय पर भी ना करो। आधे घंटे बाद में खाना लगा लूंगी... समय पर पहुंच जाना। अनु को शायद कुछ देर हो जाए। जब वो लौटेगी तो मैं झटपट कुछ बना लूंगी।

बबलू :(धीमे स्वर में) मम्मी... जोर से मत बोलिये। गुड्डू उठ जाएगा।

दुर्बा : (धीमी आवाज़ में) ठीक है... लेकिन तुम अभी नहाने को निकलो।

Scene Transition Music

(शाम का वक्त है। रेडियो पर बुलेटिन के आखिर में एंकर एआई के बारे में कुछ बताती है)

रेडियो एंकर :अब कुछ समाचार टेक्नोलॉजी की दुनिया से।जर्मनी में कार बनाने वाली एक मशहूर कंपनी और प्रमुख ग्राफिक्स चिप निर्माता कंपनी ने नई अत्याधुनिक कारों के निर्माण के लिए हाथ मिलाया है। ऑटोमोबाइल कंपनी के प्रवक्ता के मुताबिक इस करार के बाद अनूठी ऑटोनॉमस (Autonomous) कारों का निर्माण किया जा सकेगा। इन कारों में आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस का इस्तेमाल होगा और ये कारें रोड पर दौड़ने के लिए ड्राइवर की मोहताज नहीं रहेंगी। कंपनी को उम्मीद है कि तीन वर्षों में ये परियोजना पूरी जाएगी। आज के लिए समाचारों में इतना ही..।

(समर रेडियो ऑफ कर देते हैं।)

अनु :पापाजी, आपको तो मालूम ही है ना... मैं इसी पर तो रिसर्च करने वाली थी।

बबलू : (चौंकते हुए) ऑटोमोबाइल में एआई को लेकर !लेकिन दीदी तुम्हारा विषय तो फिजिक्स है। मुझे लगा कि..

अनु :हां .. तुम्हें तो लगता है कि सिर्फ इंजीनियर ही आर्टिफीशियल इंटेलीजेंस पर रिसर्च कर सकते हैं। जबकि आज के दौर में ऐसी कोई बंदिश नहीं। अपने विषय से जुड़े दूसरे मुद्दों पर भी हम आसानी से काम कर सकते हैं।

दुर्बा : अब इतने सालों के बाद तुम्हारी एमएससी पूरी होगी... तो क्या अब भी तुम्हें ऐसे मौके मिल सकते हैं ?

समर : कुछ ज्यादा कोशिश करनी पड़ेगी .. और क्या ..। लेकिन मुझे यकीन है कि देरसबेर अनु अपने सपनों को जरूर साकार करेगी।

अनु :देखो बबलू। ऑटोमोबाइल में आर्टिफीशियल इंटेलीजेंस ज्यादा मुश्किल बात नहीं है। बस, मशीनों को सिर्फ यही तो सिखाना है कि सड़क सुरक्षा के नियमों को कैसे समझा जाए। कार में मौजूद कंप्यूटर का एल्गोरिद्म (Algorithm)कुछ इस तरह लिखना होगा कि वो रोड सुरक्षाकी बातों को समझ ले.. जैसे कि ट्रैफिक लाइट या फिर साइनपोस्ट।

बबलू :एल्गोरिद्म ? ये क्या बला है दीदी । **(मजाकिया अंदाज में)** लग रहा है जैसे किसी ने एलजेब्रा(Algebra) और रिदम (Rhythm) को एकसाथ मिलाकर रख दिया हो।

अनु : मैं बताती हूं। एल्गोरिद्म .. दरअसल किसी भी कंप्यूटर प्रोग्राम का आधार है। इसे ऐसे समझ सकते हो कि यह लगातार हिसाब लगाने की एक तरकीब है। डिजिटल कामकाज का काफी दारोमदार एल्गोरिद्म पर ही है। अगर हम सही अंदाज में एल्गोरिद्म तैयार कर सकें तो कंप्यूटर भी उतनी ही आसानी से निर्देशों को समझ सकता और सीख भी सकता है।

समर :शायद तुम्हारा मतलब मशीन लर्निंग (Machine Learning) से है। इसका जिक्र डोनाल्ड हब (Donald Hebb) ने सन 1949 में अपनी मशहूर किताब 'द ऑर्गनाइजेशन ऑफ बिहेवियर' (The Organization of Behaviour) में किया था।

बबलू :अच्छा ! मतलब मशीन का व्यवहार। (मजाकिया अंदाज में) अब मैं अपनी मशीन को डांट भी सकता हूं कि ज्यादा बदतमीजी मत करो... तमीज में रहो।

(सभी हंसते हैं)

अनु :मशीनें तो हमारे गुड्डू की तरह हैं।

दुर्बा :क्या कहा? गुड्डू की तरह ? क्या अनु... कैसी बात कर रही हो। कहां ये बेहूदी मशीनें और कहां हमारा प्यारा सा गुड्डू।

अनु : (हंसते हुए) अरे मम्मी..। मैं तो सिर्फ दोनों की समझ के हिसाब से ये बात कह रही थी। जैसे जैसे गुड्डू ज्यादा चीजों के देखेगा, सीखेगा... वो और ज्यादा बुद्धिमान होता चला जाएगा।

दुर्बा :हां, ये तो खुदबखुद हो जाएगा..। तुम्हें इसके लिए चिंता करने की जरूरत नहीं है।

अनु :मम्मी..। आप ठीक कही रही हैं लेकिन मशीनों में ऐसा खुदबखुद नहीं होता है। मशीनों को सिखाने के लिए कुछ अलग से इंतजाम भी करने पड़ते हैं।

समर : दुर्बा**,** तुम भूल गईं क्या ? जब तुम मोबाइल फोन में वाइस रिकॉगनिशन सिस्टम (Voice RecognitionSystem) यानी आवाज़ पहचाननेवाला एप देख रहीं थी तो फोन ने तुमसे क्या-क्या पूछा था ?

दुर्बा :(हैरत के साथ) नहीं... मैं तो सचमुच भूल ही गई कि क्या पूछा था?

समर : तब आपसे कुछ शब्दों का उच्चारण करने के लिए कहा गया था जिससे कि फोन के अंदर मौजूद प्रोग्राम उच्चारण करने के लिए तुम्हारे तरीके को समझ ले और अपनी याददास्त में जमा ले।

दुर्बा :हां–हां याद आ गया। लेकिन तुम्हें तो मालूम ही है कि मैं पिछले कुछ समय ये वो प्रोग्राम इस्तेमाल नहीं कर रही हूं।

समर : इससेकोई फर्क नहीं पड़ता दुर्बा। हाल-फिलहाल में आपके उच्चारण करने का अंदाज तो बदला नहीं है..। ऐसे में प्रोग्राम भी पहले की ही तरह जवाब दे देगा।

दुर्बा :ये तो बहुत मजेदार है।

अनु :मजेदार तो है लेकिन सब कुछ इतना आसान भी नहीं। मशीनें इंसानों की तरह तो हैं नहीं कि जिनको भूलने की बीमारी हो। एक बार अगर आपने शब्द, आवाज़ या दृश्यों के जरिये को जानकारी दे दी तो वो इनकी मेमोरी में स्टोर हो जाती है। इंसान और मशीनों में यह एक बड़ा अंतर है।

(फोन की घंटी बजने की आवाज़/ अनु फोन रिसीव करती है)

अनु : (फोन पर बात करते हुए) हेलों.. हां रीतेश। मैं एकदम ठीक हूं और गुड्डू भी अच्छा है। हां हां मेरा एडमिट कार्ड भी आ गया है। क्या... आपकी आवाज़ साफ नहीं आ रही है..। हां .. बोलो..। मेरे एक्जाम अगले सोमवार से शुरू हो जाएंगे। ऑफिस कैसा चल रहा है...। ये अच्छी बात नहीं है रीतेश...। खाना तो समय पर खा लिया करो। क्या कहा..होटल से..। रोज- रोज होटल का मसालेदार खाना सही नहीं है। चलो ठीक है...। अपना ख्याल रखना। बाय...।

दुर्बा :रीतेश भी बस खुद को हमेशा काम में ही झोंके रखते हैं।

अनु :मम्मी..। ये तो आज की भागदौड़ भरी जिंदगी की हकीकत ही है। अगर ऐसा ना करें तो फिर लापरवाह होने का बिल्ला लग जाता है..। जो किसी भी अच्छा नहीं लगेगा।

समर :कभी-कभी तो ये सब बड़ा अजीब लगता है। सालों-साल तक एक सी दिनचर्या... ओवरटाइम और खाने की भी फुर्सत नहीं..।

अनु : पापाजी, एक बार तो रीतेश को मनोवैज्ञानिक मशवरे की भी जरूरत लगी और उन्होंने इसके लिए प्रोग्राम भी डाउनलोड किया था।

दुर्बा :क्या कहा... कंप्यूटर प्रोग्राम की मदद से मशवरा..। कैसा जमाना आ गया है।

अनु :मम्मी.., पूरी बात सुन तो लीजिए। हमेशा ही सबकुछ तो बदलता रहता है और यही दुनिया का नियम है।

दुर्बा :अच्छा-अच्छा...। ये ज्ञान तो मुझे भी है..।ये बताओ कि फिर उस प्रोग्राम का क्या हुआ?

समर : शुरुआती दिनों में तो वो प्रोग्राम बहुत ही मजेदार लगा। इसमें लिखकर अपनी बात रखनी पड़ती थी... ना कि बोलकर। जब इसमें हमने लिखा कि मैं डिप्रेशन महसूस कर रहा हूं तो

मुझसे पूछा गया कि ऐसा क्यों है ? इसके बाद हमें अपने डिप्रेशन के वो कारण लिखने थे जो हमें समझ में आते। जैसे कि बहुत ज्यादा काम... सामाजिक जिंदगी से कटाव या फिर कामकाज में बढ़ोतरी ना होना..।

बबलू :इसके बाद प्रोग्राम ने क्या जवाब दिया ?

अनु :उसने हमें वो सभी अच्छी बातें बताईं जो कोई भी इंसान कहता। हां.. उसने हमें थौड़ी बहुत कसरत करने और मेडिटेशन की भी सलाह दी ताकि डिप्रेशन को दूर किया जा सके।

समर : वाह.. ये बड़ा शानदार प्रोग्राम था।

अनु :बेशक..। लेकिन कुछ दिनों के बाद जब हमने इससे कुछ मुश्किल सवाल पूछे तो वो बगलें झांकने लगा।

बबलू :अच्छा ? ऐसा क्या हुआ दीदी ?

अनु : दरअसल वो फिर हमेशा एक से ही जवाब देने लगा। हमारी भी समझ में आ गया कि अब इसके जबावों का भंडार खत्म हो गया है। जिस रफ्तार से हम सवाल पूछते वो जबाव नहीं दे पाता था। एक दिन तो बहुत मजा आया पिताजी।

समर :क्या हुआ अनु ?

अनु :मैंने गुस्से से लिखा कि वो एक बेवकूफ काउंसलर है और उसे कुछ नहीं आता। तो उसने जवाब में उल्टा मुझे ही बेवकूफ बता दिया।

(सभी लोग हंसते हैं)

समर : दरअसल वो प्रोग्राम बहुत छोटे डेटाबेस के साथ डिजायन किया गया होगा.. तभी उसके जवाब भी जल्दी ही खत्म हो गए।

अनु :हां, वो भी एक किस्म की नैरो आर्टिफीशियल इंटेलीजेंस ही थी। लेकिन आज के दौर से उसकी तुलना करें तो वो काफी शुरुआती स्तर का प्रोग्राम था। हकीकत तो ये भी है कि कोई आर्टिफीशियल इंटेलीजेंट प्रोग्राम या मशीन... नैरो एआई के दायरे से ज्यादा आगे नहीं जा पाई है।

बबलू :नैरो एआई... ? मैं कुछ समझा नहीं दीदी।

अनु : दरअसल नैरो एआई एक तयशुदा दायरे में ही काम करती है भले ही वो हमें बहुत बेहतर नजर आती हो। गूगल एसिसटेंट (Google Assistant), गूगल ट्रांसलेट(Google Assistant), सीरी (Siri) और दूसरे लैंग्वेज प्रोसेसिंग टूल (language Processing toos) नैरो एआई के ही उदाहरण हैं।

समर :बबलू, कुछ समझ में आया तुम्हारे ?

बबलू :झूठ क्या बोलूं पापाजी। मैं तो अब भी समझने की कोशिश में ही हूं।

समर : (हल्की हंसी के साथ)अभी ये सब भूल जाओ और अपने रोबोट पर ध्यान दो।

बबलू :हां, सही कहा पापाजी..। अपने रोबोट को तो मैं भूल गया था।

समर :बबलू,मान लो कि तुम्हारे रोबोट में एआई का इस्तेमाल होता और उसमें इस तरह के निर्देश दर्ज होते कि रोबोट धीरे-धीरे मुड़े और धुरी पर सीधा भी रहे.. तो कैसा रहता?

बबलू :ये तो जबरदस्त रहता पिताजी! लेकिन मैं ऐसा भला कैसे कर सकूंगा ?

समर : (हल्की हंसी के साथ) इसके लिए तो हमें कुछ मशक्कत करनी पड़ेगी।और ऐसी आर्टिफीशियल इंटेलीजेंस भी एक तरह से नैरो एआई ही है।

बबलू :पापाजी, अगर हम रोबोट में कुछ ज्यादा आर्टिफीशियल इंटेलीजेंस लगा लें और वो ट्रैफिक लाइट्स, साइनपोस्ट वगैरह को पहचानने लगे..तो क्या उसे नैरौ एआई ही कहा जाएगा ?

समर :देखो बबलू...। नैरो एआई को वीक एआई (weak AI)भी कहा जाता है हालांकि इन शब्दों से ज्यादा फर्क तो पड़ता नहीं। हकीकत में तो इन्हीं नैरो या वीक एआई की बदौलत हम रोजमर्रा के वो तमाम काम मशीनों से करवा सकते हैं जिनसे हमें ऊब होने लगती है।

दुर्बा :मैं सोच रही हूं कि काश कोई ऐसी दिमागदार मशीन भी होती जो डाइनिंग टेबल पर प्लेटें सजाती... उनमें खाना परोसती और फिर हमें खाने पर बुलाती।

(सभी हंसते हैं)

अनु : वाह मम्मी..।आपने भी क्या खूब कहा..। वैसे हम आपका इशारा समझ गये हैं। आओ बबलू... चलिए पिताजी .. खाना लगाने में मम्मी की कुछ मदद करते हैं।

समर :हां.. हां... चलो...। साढ़े दस बज गए हैं..।

दुर्बा : (मजाकिया अंदाज में) मुझे खुशी है कि कुदरती मशीनें मेरी मदद के लिए आ रही हैं।

(सभी हंसते हैं)

Scene Transition Music

(Tech Fair का दृश्य /बबलू अपने रोबोट के साथ दर्शकों के सवालों के जवाब दे रहा है)

पहला दर्शक : क्या ऐसे रोबोट्स का इस्तेमाल चट्टानी या पहाड़ी इलाकों में भी हो सकता है?

बबलू : मेरे रोबोट की क्षमता ज्यादा तो नहीं है। लेकिन कुछ फेरबदल करके इसे पहाड़ी इलाकों में भी चलने लायक बनाया जा सकता है।

दूसरा दर्शक :किस तरह के फेरबदल की बात कर रहे हैं आप?

बबलू :सबसे पहले तो इसके ढांचे में बदलाव करके इसे और मजूबत बनाना होगा। और फिर...

पहला दर्शक :और फिर क्या ?

बबलू :मुझे लगता है कि हमें एआई की मदद भी लेनी होगी।

दूसरी दर्शक:तुम्हारा मतलब आर्टिफीशियल इंटेलीजेंस से है?

बबलू :हां। उबड़खाबड़ रास्तों पर रोबोट तभी बेहतर तरीके से चल सकता है जबकि वो खुद ही फैसला करने की ताकत रखता हो। और ऐसा सिर्फ एआई से ही संभव है।

पहला दर्शक :शाबाश बेटा...। मैं एक कॉलेज में टेलीकम्यूनिकेश इंजीयिरिंग का प्रोफेसर हूं। तुमने अपने जवाब से मेरा दिल जीत लिया। लेकिन जरा ये बताओ कि इसमें तुम किस तरह की एआई का इस्तेमाल करोगे?

बबलू :सर, मुझे इसके बारे में ज्यादा जानकारी नहीं है लेकिन मेरी दीदी बता रही थी कि शायद नैरो या वीक एआई का इस्तेमाल करना होगा।

पहला दर्शक :तुम्हारी दीदी? तुम्हारी दीदी भी आर्टीफीशियल इंटेलीजेंस के फील्ड में ही हैं?

बबलू :नहीं.. ..दरअसल वो.... वो यहीं है..**(जोर से पुकारता है)** दीदी..।

अनु :आ रही हूं बबलू। कोई दिक्कत है क्या?

(अनु तेजी से आती है और बबलू से बात करने वाले प्रोफेसर दीक्षित को पहचान जाती है)

अनु :(हैरानी के साथ) प्रणाम सर...। आप यहां कैसे?

दीक्षित : (चौंकते हुए) अनामिका..। ये आपका भाई है?

अनु :जी सर।**(बबलू से मुखातिब होते हुए)** बबलू.. आप हैं प्रोफेसर दीक्षित। एआई के बहुत बड़े जानकार। बीएससी के दौरान मुझे इनके साथ एक प्रोजेक्ट में काम करने का मौका मिला था।

दीक्षित : (हल्की हंसी के साथ) वो तो छोटी सी झलक थी एआई की। तब हमने एल्गोरिद्म से सिर्फ परिचय ही तो किया था और ... सामान्य सेंसर का इस्तेमाल किया था।

अनु :सर, मुझे तो उसी से एक हौसला मिला था.. कुछ नया सीखने का। तबसे से एआई में दिलचस्पी बनी हुई है।

दीक्षित :अब मेरी समझ में आ गया कि बबलू ने अपनी दीदी का जिक्र क्यों किया था। मुझे खुशी है कि तुम्हारी संगत का अच्छा असर भाई पर भी पड़ा है।

अनु : सब आपका आशीर्वाद है सर..।

दीक्षित : मैंने सुना था कि तुम्हारी शादी हो गई है। अभी कुछ दिनों यहीं पर हो क्या ?

अनु : जी सर, मैंने अपनी पढाई फिर से शुरू कर दी है। अगले हफ्ते से एमएससी फाइनल इयर के एक्जाम भी शुरू हैं।

दीक्षित :बहुत बढ़िया...। ये तुमने अच्छा किया। परीक्षाओं के बाद भी अगर तुम यहीं हो तो फिर किसी दिन मेरी लैब में आना। तुम्हें बहुत शानदार चीजें दिखाऊंगा।

बबलू : (उत्साहित स्वर में) नैरो एआई भी दिखाएंगे सर?

दीक्षित (हल्की हंसी के साथ): नैरो एआई का ठीक उलट है जनरल एआई (General AI)हालांकि दुनिया की कोई भी मशीन अभी उस स्तर पर नहीं पहुंची है। मैं तुमको एक ऐसा प्रोग्राम दिखाऊंगा जो कि शतरंज खेल सकता है और वो भी बहुत बेहतरीन अंदाज में।

अनु :लेकिन सर..। मुझे तो शतरंज खेलना आता ही नहीं।

दीक्षित :तो भी परेशान होने की कोई बात नहीं है। हमारे कॉलेज में कुछ बच्चे हैं जो बहुत शानदार शतरंज खेलते हैं। उनमें से तो एक जूनियर स्टेट चैंपियन भी है। तुम वहां बैठकर देख सकती हो कि इंसानी चालों का जवाब वो कंप्यूटर प्रोग्राम किस तरह से देता है।

बबलू :सर..। मैंने एक बार टीवी में देखा था। तब विश्वनाथन आनंद का मुकाबला कंप्यूटर के साथ हुआ था।

दीक्षित :हां बेटे...। काफी पहले ... डीप ब्लू (Deep Blue) नाम के कंप्यूटर प्रोग्राम ने गैरी कास्पॉरोव को मात दी थी... और रीबेल (REBEL) ने विश्वनाथ आनंद को हरा दिया था। ये नब्बे के दशक की बात है..। तब तो तुम्हारा जन्म भी नहीं हुआ होगा।

बबलू :सर...। क्या ऐसे ही कंप्यूटर आपकी लैब में भी हैं?

दीक्षित :हमारे कंप्यूटर तो उस दौर के कंप्यूटर्स के मुकाबले कहीं ज्यादा ताकतवर हैं। अब तो मशीनों में डीप लर्निंगके कॉन्सेप्ट पर भी बात हो रही है। जब तुम लैब में आओगे...तब हम इस पर ज्यादा बात करेंगे। अनामिका... अपने भाई को साथ में लाना मत भूलना ...वो काफी होशियार है।

बबलू (हल्की हंसी के साथ): हां सर... कुदरती होशियार...। मेरी मम्मी भी ऐसा ही कहती हैं।

(बबलू की बात पर सभी हंसते हैं)

(Closing Music)

Script : DrManas ritam Das

Hindi Translation : ShriniwasOli